CHAPTER 14

EDUCATION

Doctoral Theses

01. ARORA (Chetna)
Role of Digital Technology in Mixed Ability Science Classrooms.
Supervisor: Dr. Subhash Chander
Th 26631

Abstract

Every classroom consists of students with a spectrum of abilities and a whole range of learning styles and preferences. One can observe the multifariousness in the variety of learning activities that interest different learners as also in the multitude of factors at play that govern their learning abilities. This heterogeneity must be the basis that guides the choice of effective pedagogy in a classroom. The very pragmatic Gardner's theory of multiple intelligence (1983) propounds this very idea. One teaching pedagogy or instructional practice cannot cater to all learners. So even though Inclusive education as a concept aligns beautifully with this theory and has been gaining prominence over the last decade however, unfortunately its implementation across our educational institutions has been far from satisfactory. The focus being unduly centred on children with special needs or on marginalized groups and not encompassing the entirety of the mixed ability earners. Also, integration of technology into a classroom is not new and has been prevalent for almost two decades with models like SAMR (Puentedura, 2009), H.E.A.T., TIM framework, and the famous TPACK model (Shulman, 1986) consistently gaining ground. The COVID-19 pandemic overnight brought technology to the forefront in an unprecedented manner as the only alternative for continuing education & teaching. Furthermore, pedagogy and the teaching learning process must at every point be in tandem with the subject being taught and its inherent nature. The researcher, for the sake of this thesis, has focused specifically on the learners of science only because the nature of science leads to development of cognitive skill development which in turn directly impacts mixed-ability learners. National Education on Policy (NEP-2020) has also laid emphasis on science education and the role digital technology plays in experiential learning. This study underlines the role of digital technology in the case of mixed-ability science classroom learners with emphasis on secondary level. The researcher has undertaken a qualitative approach leveraging detailed interviews, classroom observations and questionnaires to understand science teaching, mixed-ability classroom practices, and use of digital technology. The researcher also got this rare, freakish chance to be able to observe the teaching-learning process transform during the pandemic from physical to virtual and back.

Contents

1. Core Concept, primary considerations and research objects 2. Conceptual framework- developing roadmap 3. Design of the study-Building blueprint of the journey 4. Analysis and interpretation- decoding 5.Developing framework for instructional design and module 6. Bibliography 7. Appendix.

02. ललित कुमार
भारत में ट्रान्सजेंडर पहचान : एक सामाजिक एतिहासिक अध्ययन ।
निर्देशिका: प्रोफ. नमिता रंगनाथन
Th 27027

सारांश

प्रस्तुत शोधकार्य भारत में ट्रान्सजेंडर पहचान का समाजीक-एतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करता है शोध कार्य की शुरुआत भारतीय शैक्षिक व्यवस्था मैं शैक्षिक समावेश के प्रशन से सुरू हुई थी । भारतीय सर्वोच्चय न्यायालय के नालसा (एन. एल. एस. ए.) निर्णय 2014 के पश्चात भारतीय शैक्षिक व्यवस्था ट्रान्स्जेंडर के शैक्षिक समावेश की लिए कितनी तैयार है? इसी प्रशन का उत्तर खोजने के उदेश्य से दो स्तरीय पलट अध्ययन किए गए । प्रथम स्तर के पायल्ट अध्ययन का उदेश्य ट्रांसजेंडर बच्चों के शैक्षिक समावेश के लिए विधालयी स्तर पीआर की गयी तैयारियों का अन्वेष्ण करना था इस अध्यय न में हमने पाया की शैक्षिकों को ट्रांसजेंडर पहचान के विषय मैं कुछ भी नहीं पता है। उनके अनुसार अभी विधालय में ट्रांसजेंड र बच्चा उपस्थित नहीं है। केवल एक शिक्षक को ट्रांसजेंडर के विषय में पता था और उनके अनुसार ट्रांसजेंड र का मतलब हिजड़ा से था। दूसरे स्तर के पायल्ट अध्ययन का उदेश्य शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में ट्रांसजेंड र विषय की स्थिति को जानना था । इस अध्यय न मैं चार प्रशिद्ध संस्थानों के दो वेर्षीय बी. एड. पाठ्यक्रम में ट्रांसजेंड र विषय से संबन्धित स्थिति को जानने का प्रयास किया गया था हमने पाया की एक विश्व विधालय को छोडकेर बाकी तीन ने तीसरे जेंडर और ट्रांसजेंड र शब्द को अपने पथक्रम मैं समिलित किया है, परंतु उनकी अध्ययन सामग्री में ट्रांसजेंडर व्यक्ति से संबन्धित किसी भी मुदे का विवरण नहीं मिलता है। इन दोनों पलट अध्ययनों ने शोध के केंद्र को भारतीय शिक्षा व्यवस्था से ट्रांसजेंडर की और मोड दिया क्योंकि शैक्षिक समावेश के लिए सबसे पहले यह जानना आवश्यक है की ट्रांसजेंडर क्या है? जब हमें पता ही नहीं है की ट्रांसजेंडर क्या है? तो फिर ट्रांसजेंडर समावेश कैसे हो पाएगा ।

विषय सूची

1. शोध औचित्य , सोध प्रसन एवं उदेश्य व सैद्धांतिक रूपरेखा 2. विश्व एवं भारतीय इतिहास में ट्रान्सजेंडर पहचान की उपस्थिती का अध्ययन 3. वर्तमान ट्रान्सजेंडर पहचान को सामाजिक-एतिहासिक मूल में संदर्भित करना 4. सोशोध विधि एवं डाटा (आंकड़ों) का वृहद प्रस्तुतीकरण 5. ट्रान्सजेंडर दुनिया की समझ: डाटा विश्लेषण भाग एक 6. ट्रान्सजेंडर दुनिया की समझ: डाटा विश्लेषण भाग दो. 7. शोध निष्कर्षो और शैक्षणिक निहितार्थों का सारांश एवं चर्चा.

03. नसरुद्दीन
विधालयी शिक्षा पर राजनैतिक विचारधाराओं का प्रभाव : एक अध्ययन।
निर्देशिका: डॉ. राम निवास और डॉ. अमित कुमार सुमन
Th 27265

सारांश

हम वर्तमान के साक्षी है परंतु हमारा जीवन इतिहास से जुड़ा हुआ है , अर्थन वर्तमान के इस वृक्ष की जड़ें भूतकाल में गहराई से समाई हुई है. इतिहास लेखन का प्रसन बहुत चुनौती पूर्ण है । फिर भी तमाम लोग इतिहासकर के रूप में अपने विचारों को पुस्तक की शक्ल में समाज के सामने लाते रहते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए की किसी खास व्यक्ति , दल समुदाय, धर्म, संगठन अथवा जातिगत संस्था द्वारा अपने उदेश्यों तथा हितों की पूर्ति हेतु तैयार की गई विषयवस्तु इतिहास की श्रेणी में नहीं रखी जा सकती अत: सजगता इस बात की होनि चाहिए की पाठ्यक्रम निधारित करने वाली समिति एसी पाठयसामग्री की शामिल करें जिस पर सभी की सहमति और स्वीकार्यता प्राप्त हो। यदि एसा किन्हीं कारणवश संभव न हो तो भीं मतों की शामिल करते हुए विद्यार्थियों की तर्क और निर्णय लेने की क्षमता की बढ़ावा देना चाहिए। मुख्य रूप से विवादास्पद मुद्दों, बीएचएस को जनम देने वाली सामग्री जिसमें धर्म, नस्ल, राष्ट्रबाद, संस्कृति , स्थ्यता एटिहासिक चरित्रों आदि को मद्दे नज़र रखते हुए संबंदीती

राज्यों की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों पर राजनैतिक प्रभाव को एसएमजेएचने का प्रयास किया गया है। जिसमें शोध कर्ता ने पाया की पाठ्यसामग्री के चयन , प्रश्तुतिकरण तथा विश्लेषण में अंतर है जो संभवत : राजनीतिक विचारधारा के पराभव का नतीजा है।

विषय सूची

1. (क) प्रस्तावना (ख) संकल्पनात्म्क ढांचा 2. संबन्धित साहित्य की समीक्षा 3. शोध की रूपरेखा 4.आंकड़ों का विश्लेषण 5. शोध निष्कर्ष . संदर्भ सूची और परिशिष्ट.

04. सरिता

ग्रामीण संदर्भ में सामाजिक समावेशन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशिका: डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार

Th 26633

सारांश

यह मेरे लिए उन सभी व्यक्तियों के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त केरने का स्वर्णिम अवसर है जिन्होंने एस शोधकार्य को पूरा केरने के लिए मुझे सहायता की एवं प्रोत्साहन दिया है। सर्वप्रथम मैं , परपिता परमात्मा का समरम केरना चा हुंगी जिनके आशीर्वाद से यह यह शोधकार्य केरने मैं सफल हो सकी । मैं अपने शोधनिर्दशक डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होने मुझे निरंतर मार्गदर्शन दिया एवं अभिप्रेरित किया. इनके अमूलय सुझाव एवं मार्गदर्शन ने, न केवल शोध को पूर्ण केरने में अपितु मेरे स्मपूर्ण अकादमिक विकास में भी निरंतर सहायता की है। मैं विभागाध्यक्ष एवं डीन प्रोफ.पंकज अरोड़ा (शिक्षा विभाग , दिल्ली विश्व विध्यालय) एकम सभी शिक्षकों का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होने समय समय पर इस शोध हेतु मुझे मार्गदर्शन एवं परामर्श दिया। मैं शिक्षा विभाग के शिक्षणेतर के क्रमचारी वर्ग का भी उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त केरती हूँ।शोध में पाया ज्ञ की ग्रामीण संदर्भ मैं बालिकाओं के सामाजिक समायोजन में अबिभ्व्कोन, ग्रामीणों एवं पंचायत का योगदान भूत ही सीमित है ।इन सबका दृष्टिकोण एवं बालिकायों के प्रति अत्यधिक संकीर्ण एवं सीमित है। इन सबका दृष्टिकोण बालिकाओं के प्रति अत्यधिक संकीर्ण एवं लैंगिक पक्षपात परूँ पाया ज्ञ जो की शी नही है। अगर राजी सरकार इनके लिय जागरूकता कार्यक्रमों पीआर और अधिक ज़ोर दे तो सिथती में बदलाव की संभावना बन सकती है।

विषय सूची

1. भूमिका 2. संबंधित साहित्य की समीक्षा 3. अनुसंधान प्रारूप 4. आकांडों का विश्लेषण 5. आंकड़ो की व्याख्या एवं निष्कर्ष. संदर्भ ग्रंथ सूची, परिशिष्ट.

05. SHARMA (Preeti)

Critical Analysis of the Role Performance of Women Sarpanches in Education and health: A Study in Haryana.

Supervisor: Dr. Rakesh Kumar

Th 26629

Abstract

This research work critically examined the qualitative aspects of functioning of Women Sarpanches in Education and Public Health. Post-independence, many programs of rural reconstruction were launched and committees were formed for suggesting measures of their regeneration, but PRIsseem to remain infested with serious problems. Upliftment of rural regions and empowerment of women have important bearing on the development of India. With all these considerations Indian Parliament had passed 73rdAmendment Act in 1992.This Act gave space to women and marginalized sections in rural local bodies through reservations, which was a

move envisioned towards developing an egalitarian society. In 2015 when education became a criterion for contesting Panchayat election in Haryana, a new team of educated Sarpanches emerged naturally. More than 65% people were out of the race. These reforms argue that service delivery mechanism of many contributing factors like education and health can become more effective through the participation of local governments in policy, planning and implementation thereby helping nations to achieve MDGs and SDGs. The 'Role Performance of Women Sarpanches in Health and Education' in this context is an interesting area to explore. In this study from four districts namely Hisar, Sonipat, Rewari, and Mewat/Nuh,32Female Sarpanches were randomly selected and interviewed. To triangulate the data,160 villagers were interviewed. Schools, primary health centres and anganwadiswere also visited. The study tried to analyse Women Sarpanches' knowledge and performance in two identified areas viz. Health and Education. The impact of eligibility criteria on the expected role performance of local representatives seems positive as per the study. Another, key finding is that the percentage of Women Sarpanches who have knowledge about their roles and responsibilities, who are doing their work themselves, who are handling people tactfully has increased in last three decades.

Contents

1. Introduction 2. Conceptual Framework 3. Methodology of the Study 4. Role Performance of Women Sarpanches: Data Analysis and Interpretation 5. Perception of villagers: Data Analysis and Interpretation 6. Conclusion 7. Bibliography, Appendices.

06. शर्मा (सुमन)

दिव्यांग व्यक्तियों का सामाजिक समावेशन विभिन्न सामाजिक संस्थायाओं के संदर्भ में : एक आध्ययन।

निर्देशिका: डॉ. नीलिमा अस्थाना

Th 26634

सारांश

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दिव्यांग व्यक्तियों की व्यक्तियों , पारिवारिक, सामाजिक सांस्कृतिक व आर्थिक सक्रियता व सहभागिता में निरंतर वृद्धि हुई है। इन बदलती सामाजिक परिस्थितियों के परिपेक्ष्य मैं शोधार्थी के मन मैं अनेक प्रसन उभर रहे थे। जैसे कि-दिव्यांग व्यक्ति परिवार व समाज में अपने समावेशन कि प्रक्रिया को किस तरह से देखते व समझते है? परिवार व समाज से वह अपने लिए किस तरह कि व्यवहारत्मक व संस्थागत सुविधों कि अपेक्षा करते है ।जिस समूह के व्यक्तियों के लिए किए गए प्रयास उनकी दृष्टि मैं उनके लिए कितने सार्थक व उपयोगी है ? वह स्वय को घर व समाज में रहने के लिए , उनके साथ कार्य व्यवहार केरने के लिए किस तरह के प्रयास करते हैं आदि । उपर्युक्त प्रश्नों के आलोक में शोध अध्यय न के प्रमुख उदेश्य दिव्यांग व्यक्तियों का संसजिक समावेशन , विभिन सामाजिक संस्थाओं के संदर्भ में : एक अध्यय न मे विषय मेन घन समझ के निर्माण हेतु वृहद स्तर पीआर संबन्धित साहित्य का अध्यय न किया गया । इससे सद्धांतिक आधार के निर्माण के रूप में शोध अध्यय न का आगे का मार्ग प्रशस्त हुआ।

विषय सूची

1. शोध आध्ययन की रूपरेखा 2. साहित्य की समीक्षा 3. शोध अध्ययन की योजना 4. आंकड़ों का संकलन एवं विश्लेषण 5. विमर्श एवं निष्कर्ष , संदर्भ सूची .

07. VINOD KUMAR A

Inclusivity in Schools of Kerala: A Study based on Index for Inclusion.

Supervisor: Prof. Sailaja Chennat

Th 26630

Abstract

A school is said to be inclusive when students with diverse abilities, linguistic differences, socio economic or other cultural differences, belonging to varied geographic areas, belonging to different social strata, religion, caste, race, gender etc receive opportunities for full and equitable participation in learning and development. Index for Inclusion is a tool developed by Tony Booth and Mel Ainscow in (2002) as a framework to promote and assess inclusivity in all educational settings. In this study, the researcher explores the application of a 'culturally calibrated Index for Inclusion' in studying the level of inclusivity in the schools of Kerala. The researcher adapted the Index for Inclusion to suit the context of the state to evaluate its inclusive practices. Objectives of the study were, to adapt the Index for Inclusion to suit the context of Kerala, to analyze the inclusivity of selected sample of schools for the extent and level of inclusivity based on the adapted Index for Inclusion, to study the extent of awareness of stake holders in implementing inclusive education and to identify the challenges faced by the stakeholders in implementing inclusive education. Based on the nature of the data qualitative descriptive research methodology was adopted to carry out the study. Tools used were information checklist for students related to infrastructure facilities of the school, information checklist for special educators, questionnaire for regular teachers, rating scale for students and interview schedule for Principal, parents of children with special needs and special educators. This study was carried out in Trivandrum district of Kerala. 3 schools were selected based on its location (rural, suburban and urban schools) Based on certain specific criteria a representative sample size of stake holders was selected from each school which included, students, regular teachers, special teachers and parents of children with disabilities using simple random sampling method. Principal of each school was also part of the sample selected for the study. Findings of the study are: All special teachers provided individualised educational service for all children with disabilities. The special educators in all schools of Kerala were appointed on part time basis. They were not satisfied with the service conditions in the school especially with the fact that the school was providing salary on hourly basis. Kerala being a literate state, the researcher expected an advanced status in inclusive education. But having examined the status of inclusivity in three selected schools (rural urban, suburban), the researcher felt that many of the factors for effective inclusive practice in schools were not in place and that it was a long way ahead for the state of Kerala to achieve the goals of inclusive education.

Contents

1. Introduction 2. Review of Literature 3. Methodology 4. Analysis and Interpretative Discussion 5. Summary and Conclusion 6. Bibliography.

08. यादव (अखिलेश)

विशेष आवश्यकता (निःशक्त) बच्चों की शिक्षा के लिए वितिय, संसाधन सहायता एवं समर्थन सेवाओं के प्रबंध में योजनाओं , नीतियों , विधालय एवं परिवार की भूमिका का अध्ययन ।

निर्देशिका: डॉ. राजेंद्र प्रसाद

Th 26635

सारांश

किसी भी समाज कि उन्नति में शिक्षा म्हत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती हैं भारत जैसे लोकतंत्रीय देश में शिक्षा कि भूमिका और अधिक म्हत्वपूर्ण हो जाती हैं जैसा कि इस्माइल दुर्खिम ने कहा हैं कि शिक्षा वह साधन हैं जिसके

द्वारा समाज बालको में अपने अस्तित्व कि अनिवर्या अवस्था कि तैयार केरता हैं शिक्षा और समाज एक दुशरे से इस पोरकर संबंधित हैं कि दोनों एक सिक्के दो पहलू है। यह एक सर्वविदित स्टे है, कि शिक्षा किशि भी व्यक्ति , समाज और राष्ट्र के विकास कि धुरी होती हैं। शिक्षा का संबंध सिर्फ सक्षर्ता से ही नहीं है। बल्कि शिक्षा चेतना और उत्र्दायित्व कि भावना को जागृत केरने का औज़ार भी है । शिक्षा को एक मापक या पैमाने के तौर पर देखा जाता है।जिसके आधार पर व्यकित , राज्य या देश का मूल्यांकन भी किया जाता हैं। अंत में कहा जएगा कि हमने निशक्तों को लेकर सामाजिक अभिधारणों में तो परिवर्तन प्रारम्भ कर दिया हैं। किन्तु अभी आधा काम बाकी हैं हमें केवल उनको सामनी विधालयों मेन शामिल नही करना हैं अपितु विधालयों को निशक्तों के अनुकूल बनाना भी हैं जिसके लिय शिक्षक एवं प्रशासकों को आगे आना होगा। क्यूकी हमारी शिक्षा व्यवस्था कि सबसे निचली इकाई स्कूल है के सोनों धुरी है। परिवार को प्रशिक्षण कि आवश्यकता हैं जिससे परिवार निश्क्त बच्चे कि समानय बच्चे के ही समान देख सके।

विषय सूची

1. प्रस्थावना: सोध पृष्ठभूमि 2. संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण 3. सोध अभिकल्प 4. आकांडों का विश्लेषण एवं व्याख्या 5. परिणामों की व्याख्या , निकर्ष एवं सुझाव। संदर्भ ग्रंध सूची .

09. YADAV (Neha)

Student Diversity and Participative Learning in Science.

Supervisors: Prof. Vandana Saxena and Dr. Kalyani Akalamkam

Th 26632

Abstract

Diversity is an inherent feature of any context. The educational institutions represent a complex intersection of diversity across organic and inorganic factors like persons of all ages as also the curriculum and the physical infrastructure. Furthermore, each of these has multidimensional variations. This research is conceptualized to examine the pedagogical response to students' diversity and their consequent participation in the classroom processes to optimize individual learning in a specific school subject science. As per the NEP 2020, the study is located in stage 3 (middle) and partially in stage (Secondary), from grade 7 to grade 10. The study required that the learning needs arising due to diversity among students and the pedagogical efforts to facilitate the development of thinking and process skills in each one of them be studied in detail. To maintain the focus on these primary concerns and minimize the impact of other factors the Kendriya Vidyalayas in two states are chosen for the study. The researcher is fully aware that this does not eliminate the impact of other significant factors but can minimize those to a large extent. The students, science teachers, teacher educators, and teacher education curriculum are studied in this research. The study establishes the need for rethinking the nature of students' participation and approach to teachers' continuous professional development. The students' responses explain that the teachers have an elaborate understanding of the diversity among students and are making an immense effort to help them learn the subject by employing various classroom processes. The teacher preparation programs also discuss this dimension. But, the complete focus is on content learning. The study strongly recommends that to accomplish competency-based individualized learning in science, as envisioned in NEP 2020, a fresh approach to the process of teacher preparation is required.

Contents

1. Conceptualizing the focal Points: Introduction to the Research Study 2. Comprehending the Intersectionalities: The Conceptual framework 3. The Process of Exploration: Research Methodology 4. Delineating the Field: Data Analysis and

Interpretations 5. Unfolding the future possibilities: Findings, Educational Implications: Conclusions and Limitations. Bibliography Appendices.

10. यादव (राजपाल सिंह)

सहरिया जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक शैक्षिक एवं व्यावसायिक संदर्भों का अध्ययन।

निर्देशिका: डॉ. संदीप कुमार

Th 27028

सारांश

कोई भी मानव समुदाय अपने उद्धव एवं विकास में विशित होता है। ये विशिष्टत्ताएँ उसके सामाजिक सांस्कृतिक ढांचे में उपस्थित विशेषताओं के अध्यय न के संबद्ध में समझी जा सकती है। किसी भी मानव समुदाय का अध्ययन एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो मानवता के सम्पूर्ण दर्शन में कुछ नवीन जोड़ता एवं संशोधित करता है। प्रस्तुत शोध भी इशी तरह का एक प्रयास है जो सहरिया जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक , शैक्षिक एवं वुयायसायिक संदर्भों को समझने का प्रयास करता है। अपनी प्रकृति में यह शोध शोध उन सभी बारीक पहेलुओं को अध्यय न का हिस्सा बनाता है जो सहरिया जनजाति को संपूर्णता एसडबल्यू समझने मीन शयता करते हैं। सहरिया जनजाति भारत के राजस्थान राज्य कि एक आदिम जनजाति है।अपने सीमित राजनीतिक प्रतिनिधित्व के कारण यह राजस्थान में उपस्थित अपने साथ कि अनय जनजाति कि तुलना में एतिहासिक रूप से पिछड़ी हुई है । प्रस्तुत शोध के माध्यम से शोधर्थी सहरिया जनजाति के संबंध मैं अनुपस्थित अकादमिक एवं शोध जगत कि अनुपलब्धता को भरने का प्रयास करता है।जिससे एक एसी विधि एवं अंतेर्दृष्टि का विकास किया जा सके जो इस तरह के हाशिये पर खड़े अनय मानव समुदायों के अध्ययन योगदान दे सके। प्रस्तुत शोध राजस्थान कि सहरिया जजती पर आधारित है, जिसके अंतर्गत सामाजिक –सांस्कृतिक , शैक्षिक एवं व्यावसायिक संदर्भों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। विषय कि प्रकृति एवं शोध प्रश्नों का स्वरूप गुणात्मक शोध कि अनिवार्यता कि सुनिश्चित करता है । अत : प्रस्तुत शोध अध्यय न कि लिए गुणात्मक शोध विधि का चयन किया गया है। गुणात्मक शोध विधि के अंतर्गत आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा उन निष्कर्षों, सूझवों एवं शैक्षणिक निहितार्थों कि समझने का प्रयास किया गया है । जो सहरिया जनजाति के वृहत अध्ययन से उद्दत हुए हैं।

विषय सूची

1. प्रस्तावना 2. सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों और विमर्शों का अध्ययन 3. शोध प्रविधि 4. शोध आकांडों का विश्लेषण 5. परिचर्चा निष्कर्ष एवं आशय. संदर्भ ग्रंथ सूची, परिशिष्ट.